"उत्प्रेक्षा"

पंडित विश्वनाथ जी के अनुसार "प्रकृति यानी उपमेय में उपमान की संभावना उत्प्रेक्षा अलंकार है"

"भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना"

उदाहरण –

"सोहत ओढ़े पीत पट श्याम सलोने गात।
मनहु नील मनि सैल पर आतप परयौ प्रभात॥"
मानो

यहाँ पीत वस्त्र ओढ़े कृष्ण के श्यामल शरीर में प्रातःकालीन धूप से आच्छादित नील मणि पर्वत की संभावना व्यक्त होने के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है।

कल्याणी

उत्प्रेक्षा के तीन भेद होते हैं—
(i) वस्तूत्प्रेक्षा
(ii) हेतूत्प्रेक्षा और
(iii) फलोत्प्रेक्षा

(i) वस्तूत्प्रेक्षा :— वस्तूत्प्रेक्षा में एक वस्तु में दूसरी की सम्भावना प्रकट की जाती है। जैसे—

"छिप्यो छबीलो मुख लसै नीले अंचल चीर
मनौं कलानिधि झलमलै कालिन्दी के नीर"

यहाँ मुख (उपमेय) और कलानिधि अर्थात चन्द्र (उपमान) दोनों स्थूल वस्तु-रूप हैं अतः वस्तूत्प्रेक्षा है।

(ii) हेतूत्प्रेक्षा — हेतूत्प्रेक्षा में जो हेतु नहीं है उसे हेतु मानकर उत्प्रेक्षा की जाती है। इसमें अगर आधार जगत में सम्भव है तो सिद्धास्पदा और सम्भव नहीं है तो असिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा होगी। जैसे —

अस परजरा बिरह कर गठा। मेघ साम भये धूम जो उठा॥
दाढा राहु केतु गा दाधा। सूरज जरा चाँद जरि आधा॥

यहाँ मेघ का श्याम होना, राहु-केतु का दग्ध होना, सूरज का जलना तथा चाँद का आधा होना तो सत्य है लेकिन उसका कारण नागमती के विरह को मानना अहेतु में हेतु की कल्पना करना है।

(iii) फलोत्प्रेक्षा — फलोत्प्रेक्षा में जो फल नहीं है उसमें फल की सम्भावना की जाती है।

जैसे — मानहु विधि तनु अच्छ छवि, स्वच्छ राखिबे काज।
दृग पग पोंछन को किये, भूषण पायंदाज।

यहाँ सौन्दर्य को स्वच्छ रखने के लिए नेत्र रूपी पैरों को साफ करने के हेतु पायंदाज रूप में आभूषणों की रचना कही गई है। आभूषणों के निर्माण के प्रयोजन का यह आधार असिद्ध है।

डॉ. [illegible]
हिन्दी विभाग
डॉ. [illegible] कॉलेज
[illegible]

"अतिशयोकित"